MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता

International Peer reviewed
Research Journal

Issue-60, Vol-04, Oct. To Dec. 2026

Peer Reviewed International Multilingual Research Journal

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

MAH/MUL/03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Oct. To Dec. 2026
Issue 60, Vol-04

Date of Publication
01 Oct. 2026

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication** Published by **Gholap Archana Bapu** & Printed & published at Harshwardhan Publication, At.Post. Limbaganesh Dist,Beed - 431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Harshwardhan Publication
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
vidyavarta@gmail.com vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors www.vidyawarta.com

SCAN ME!

13) बीड जिल्ह्यातील संत भूमी आणि त्यांचे सामाजिक–सांस्कृतिक योगदान....
डॉ. कैलास मच्छिंद्रनाथ होके, वडवणी ||87

14) भारतीय ज्ञान परंपरा में विश्व कल्याण की प्रेरणा
डॉ. रश्मि झारिया, कुंडम, जिला–जबलपुर (म.प्र.) ||89

15) बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण–अभिक्षमता एवं तार्किक योग्यता का अध्ययन
रोहित कुमार काण्डपाल, प्रो. रूचि हरीश आर्या, हल्द्वानी (नैनीताल) ||96

16) प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के प्रति शिक्षा समिति एवं पालक शिक्षा.....
डॉ. शिव कुमार सेजकर, बुरहानपुर ||102

17) लोक देवता वीर तेजाजी के जीवन मूल्यों में भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्व
डॉ. शिम्भु राम, डॉ. महेन्द्र लोमरोड़, नागौर (राजस्थान) ||107

18) वसंतराव नाईक मराठवाडा कृषी विद्यापीठ, परभणी येथे सादर करण्यात.....
शिंदे सिध्दार्थ बाबुराव, डॉ. घटकार दगडू तुकाराम, जळकोट ||114

19) भारतीय संस्कृति के विकास में पालि साहित्य का योगदान
आचार्य अविनाश चन्द्र शुक्ल, मुण्डेरवा–बस्ती ||119

20) सीताकान्त महापात्र के काव्य में प्रकृति का सौंदर्य विधान
डॉ. दीप्ति सिंह, सीतापुर ||121

21) हिंदी काव्य में राष्ट्रीय चेतना
डॉ. रमेश कुमार टंडन, खरसिया (छ.ग.) ||124

22) मूल्य आधारित शिक्षा–नैतिक नागरिकता, सहानुभूति और पर्यावरण.....
डॉ. विभा दुबे, कानपुर ||129

23) गाँधीजी: पत्रकारिता के दायित्व और नैतिक मूल्यों का समकालीन.....
डॉ. विनय सिंह यादव, बहरोड़, जिला कोटपूतली–बहरोड़, राजस्थान ||132

24) महिला शिक्षा और निर्णय लेने की क्षमता : सहरसा जिले का एक.....
रूपेश कुमार, डॉ. सत्येन्द्र कुमार सिंह, मधेपुरा ||138

25) बुरहानपुर के लघु व्यवसायों में डिजिटल भुगतान – अवसर एवं चुनौतियाँ
डॉ. विनोद काले, बुरहानपुर, मध्य प्रदेश ||143

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

संदर्भ सूची ग्रंथ –

१—सं., वर्मा, धीरेन्द्र हिन्दी साहित्य कोश (भाग १) पृष्ठ संख्या ७६८, ज्ञान मण्डल प्रकाशन लिमिटेड संत कबीर रोड वाराणसी संस्करण २०११

२— गुप्त, डॉ. उमाकांत नई कविता के प्रबंध और ही जीवन दर्शन पृष्ठ संख्या २६४, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण २०००

३— वर्षा की सुबह, सीताकान्त महापात्र, पृष्ठ संख्या८, राजकमल प्रकाशन प्राइवेटलिमिटेड १ बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली संस्करण २०२१

४— वर्षा की सुबह, सीताकान्त महापात्र, पृष्ठ संख्या१८, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड १बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरिया गंज नई दिल्ली संस्करण २०२१

५— वर्षा की सुबह, सीताकान्त महापात्र,, पृष्ठ संख्या ९, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड १ बी, नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज नई दिल्ली संस्करण २०२१

६— वर्षा की सुबह, सीताकान्त महापात्र, पृष्ठ संख्या ६९ राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड १बी नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज नई दिल्ली संस्करण २०२१

७— वही, पृष्ठ ७०

८— वर्षा की सुबह, सीताकान्त महापात्र पृष्ठ संख्या ८८ राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड १बी नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज नई दिल्ली संस्करण २०२१

९— वर्षा की सुबह, सीताकान्त महापात्र, पृष्ठ संख्या, १२ राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड १बी नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज नई दिल्ली संस्करण २०२१

१०— वही, पृष्ठ संख्या, १०३

११— वही पृष्ठ संख्या, १२७

❑❑❑

21

हिंदी काव्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. रमेश कुमार टंडन
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
शास. महात्मा गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
खरसिया (छ.ग.)

हिंदी साहित्य में ऐसे अनेक कवि हैं जिन्होंने लोगों में देश–प्रेम जगाया है. राष्ट्रीय चेतना के कवियों में मैथिली शरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, सोहन लाल द्विवेदी और रामधारी सिंह दिनकर प्रमुख हैं.

मैथिली शरण गुप्त की प्रसिद्ध कृति भारत–भारती की 'भारत वर्ष' कविता भारतीय भूमि की महानता, दिव्यता और गौरव का सजीव चित्रण करती है. कविता में कवि मैथिलीशरण गुप्त ने भारतवर्ष को पृथ्वी का गौरव और प्रकृति की पुण्य लीला–स्थली बताया है। हिमालय का ऊँचा मस्तक और पवित्र गंगाजल इस देश की सुंदरता और पवित्रता में चार चांद लगाते हैं। इसमें भारत को साधारण भूमि नहीं, बल्कि स्वयं परमपिता परमात्मा का क्रीड़ा–क्षेत्र कहा गया है। यहीं भगवान ने राम और कृष्ण जैसे पूर्ण अवतार लेकर अपनी लीलाएँ रचीं। यहाँ के निवासी स्वयं को आर्य और अमृत की संतान मानते है जो हमेशा सत्य का पक्ष लेते हैं। यहाँ के शांत और पवित्र तपोवनों में ऋषियों ने आत्मज्ञान और सत्य के प्रत्यक्ष दर्शन किए। इस भूमि ने जीवन और मरण के संघर्ष को बहुत सफलता और सहजता से देखा है। यहाँ के लोगों ने हर परिस्थिति में बंधनों से ऊपर उठकर मुक्ति को ही अपना मुख्य लक्ष्य माना है। दुनिया के अन्य सभी देशों की तुलना में हमारे भारतवर्ष का उत्कर्ष सबसे अधिक है, क्योंकि यह संतों, ऋषियों और देवताओं की पावन पुण्यभूमि है। इनकी कविता भजो भारत को तन–मन से, देशप्रेम, देशभक्ति और मानवता की भावना से ओत–प्रोत एक अन्य रचना है। इस कविता

में कवि देशवासियों का आह्वान करते हैं कि वे अपने भारत देश की सेवा तन और मन से करें। केवल निष्क्रिय या अज्ञानी बनकर बैठने से काम नहीं चलेगा, बल्कि सचेत होकर देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना होगा। यहाँ कवि पूछते हैं कि लोग आँखें मूँदकर किस इष्टदेव का ध्यान करते हैं? इस देश के करोड़ों देशवासियों में ही भगवान का वास है। यदि हम अपने ही देश के लोगों की भलाई और सेवा करेंगे, तो यही सच्ची ईश्वर–भक्ति होगी। भारत भूमि वह पवित्र पावन धरती है जिसके लिए ईश्वर ने भी यहाँ अवतार लिए हैं। जिस भूमि पर जन्म लेकर हम अन्न–जल ग्रहण करते हैं और जो पग–पग पर तीर्थ के समान पवित्र है, उसे संपन्न और समृद्ध बनाना हमारा कर्तव्य है। यदि हम ऐसा नहीं करते, तो हमारे पास धन होने का भी कोई अर्थ नहीं रह जाता। कवि की कामना है कि देश से अज्ञान रूपी अंधकार का हमेशा के लिए नाश हो जाए। घर–घर में ज्ञान और स्वतंत्रता का नया प्रकाश फैले, जिससे सभी देशवासी एक नए और गौरवशाली जीवन का अनुभव कर सकें। उनकी अन्य कविता भारत माता का मंदिर यह राष्ट्रीय एकता, समता, प्रेम और भाईचारे का एक अनूठा संदेश देती है। इसमें कवि ने संपूर्ण भारतभूमि को एक पवित्र मंदिर के समान बताया है। इस मंदिर में ऊंच–नीच या भेदभाव की कोई जगह नहीं है, बल्कि यहाँ केवल समानता की चर्चा होती है और सबका कल्याण एवं हित होता है। यहाँ सभी लोग मिल–जुलकर अपने सुख और दुःख को आपस में बाँटते हैं। यह स्थान वैर–भाव या द्वेष से कोसों दूर है। इस मंदिर में अलग–अलग संस्कृतियों और परंपराओं के गुणों व गौरव का ज्ञान प्राप्त होता है। यहाँ सबका स्वागत, आदर और समान सम्मान किया जाता है। इस कविता में कवि यह संदेश देते हैं कि हम अपने हृदय को पवित्र बनाकर, अजातशत्रु बनकर इस विशाल देश में सबको अपना मित्र बना लें तथा एक आदर्श चरित्र का निर्माण करें। इनकी प्रमुख कविता मातृभूमि हमारी जन्मभूमि के प्रति अगाध प्रेम और समर्पण की भावना को दर्शाती है। कवि ने इस कविता में मातृभूमि को किसी साधारण धरती का टुकड़ा नहीं, बल्कि एक साक्षात देवी या माँ के रूप में देखा है। हरी–भरी धरती मातृभूमि का सुंदर शरीर है, जिस पर नीला आकाश एक वस्त्र की तरह सुशोभित है। सूर्य और चंद्रमा इसके मुकुट हैं, चमकता हुआ सागर इसकी करधनी है और नदियाँ प्रेम के प्रवाह व फूल–तारे इसके आभूषण हैं। मातृभूमि हमारा पालन–पोषण एक माँ की तरह करती है। वह हमें अन्न, जल और हवा देती है और बदले में हमसे किसी भी प्रकार की कामना नहीं रखती। कविता के माध्यम से कवि यह इच्छा व्यक्त करते हैं कि जीवन के अंत में उनके प्राण इसी पावन माटी में विलीन हों और वे इस मातृभूमि की धूल में खेलकर मृत्यु से बिल्कुल न डरें।

राष्ट्रीय धारा के अन्य प्रमुख कवि माखनलाल चतुर्वेदी की कविता प्यारे भारत देश, देश प्रेम, राष्ट्रीय चेतना और भारतीय संस्कृति की महानता को दर्शाने वाली एक अत्यंत ओजस्वी रचना है। कवि इस कविता में लिखते हैं कि हे प्यारे भारत देश! आकाश के हर कोने में तुम्हारा यश फैला हुआ है और पवन का प्रत्येक झोंका तुम्हारी अगाध शक्ति और बल का अहसास कराता है। पृथ्वी, जल और आकाश तीनों लोकों में तुम्हारी गौरवशाली गाथाएँ झूला झूल रही हैं और यहाँ का कण–कण गतिमान होकर सुनहरा भविष्य गढ़ रहा है। यह पावन भूमि महान ऋषियों, ज्ञानियों और तपस्वियों की तपोभूमि रही है। यहाँ वेदों के ज्ञान से लेकर देश के लिए प्राण न्यौछावर करने वाले बलिदानों की एक लंबी परंपरा रही है। यहाँ की सुबह की पहली किरण से ही ज्ञान और देशभक्ति की ज्योति जगमगा उठती है। पवित्र गंगा नदी का जल खेतों और खलिहानों को सींचता है, जो देश के लिए बलिदान होने वाले वीर बलिदानियों के आंसुओं और समर्पण की तरह देश को समृद्ध और पावन बनाता है। यह देश पूरी दुनिया के दुखों और क्लेशों को दूर करने की क्षमता रखता है। 'एक तुम हो' कविता में कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने अपनी मातृभूमि और प्रियतम के प्रति अगाध निष्ठा, प्रेम और समर्पण को व्यक्त किया है। कवि ने प्रकृति के उपादानों जैसे सितारे, चरण, नदियाँ, शिखर आदि के माध्यम से देश के प्रति अपने अनन्य प्रेम को दर्शाया है. कवि आकाश में

चमकते दो तारों, धरती पर पड़ने वाले दो चरणों, पवित्र त्रिवेणी (गंगा, यमुना, सरस्वती का संगम) और हिमालय के दो शिखरों की तुलना अपने प्रिय मातृभूमि या आराध्य इश्वर से करते हुए कहते हैं कि इन सभी महान और सुंदर रूपों में एक प्रधानता तुम्हारी ही है। तुम ही इन सबके केंद्र और मूल प्रेरणा हो. लहरों से भरा हुआ समुद्र इस बात का गवाह है कि यह भारत देश ही मेरी इस धरती का सबसे अनमोल और मुख्य केंद्र–बिंदु है। संसार की ये उलझनें किसी अद्भुत कला के मेल जैसी हैं और हमारे हृदय की होड़ में बनी हुई मन की स्थितियाँ हमारे पक्के इरादों को दर्शाती हैं. इनकी अन्य कविता शबलि–पंथी से देशभक्ति, साहस और राष्ट्र के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाले सैनिकों और बलिदानियों को समर्पित है। इस कविता में कवि सैनिकों और बलिदान के मार्ग पर चलने वालों से कहते हैं कि रास्ते में आने वाले दुखों या कांटों को देखकर व्यर्थ में दुखी नहीं होना चाहिए। उन्हें कांटों को भी फूलों की तरह सहर्ष स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि देश के लिए दिया गया बलिदान पीड़ादायक नहीं बल्कि सुखद और गौरवशाली होता है। सांसारिक मोह–माया या अन्य सत्यों को छोड़कर केवल अपने आराध्य अर्थात मातृभूमि और भगवान के आदेश का पालन करना चाहिए। सैनिक को युद्ध भूमि में बिना किसी डर के अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ना है। बलिदान के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को ब्रह्मांड और अपनी शक्ति का अहसास करते हुए अपने जीवन रूपी धन को देश पर न्योछावर कर देना चाहिए। यह कविता सिखाती है कि देशप्रेम और कर्तव्य के आगे बड़े–बड़े सुख भी तुच्छ हैं. इनकी प्रसिद्ध कविता पुष्प की अभिलाषा, देशभक्ति, त्याग और मातृभूमि के प्रति समर्पण की भावना से ओत–प्रोत एक अमर रचना है। इस कविता में कवि ने एक साधारण फूल के माध्यम से अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को व्यक्त किया है। फूल अपनी इच्छा प्रकट करते हुए कहता है कि उसकी कोई बड़ी या सांसारिक चाहत नहीं है. फूल की यह चाह नहीं है कि उसे किसी अप्सरा के गहनों में गूँथा जाए। वह यह भी नहीं चाहता कि प्रेमी की माला में बँधकर वह किसी प्रेमिका को आकर्षित करे। फूल की यह भी इच्छा नहीं है कि वह किसी महान सम्राट के शव पर डाला जाए या भगवान या किसी देवता के सिर पर चढ़कर अपने भाग्य पर गर्व करे। फूल इन सभी सांसारिक सुखों, मान–सम्मान और ईश्वरीय चरणों में अर्पित होने के गौरव को ठुकरा देता है। उसकी एकमात्र इच्छा यह है कि वनमाली उसे तोड़कर उस रास्ते पर फेंक दे, जिस रास्ते से देश के वीर सिपाही मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना बलिदान देने जाते हैं। फूल उन वीर सैनिकों के पैरों की धूल बनना अपने लिए सबसे बड़ा सम्मान और सौभाग्य मानता है। यह कविता सिखाती है कि व्यक्तिगत गौरव, दिखावे और सांसारिक भोग–विलास से बढ़कर देश और मातृभूमि के प्रति कर्तव्य होता है और देश के लिए बलिदान देने वाले सैनिकों का मार्ग समाज में सर्वोच्च और वंदनीय है।

राष्ट्रीय चेतना के जागृत कवि सोहन लाल द्विवेदी द्वारा रचित प्रसिद्ध कविता कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती जीवन में निरंतर संघर्ष, प्रेरणा और सकारात्मकता का संदेश देती है। कवि इस कविता में कहते हैं कि यदि आप जीवन की बाधाओं और डर का सामना नहीं करेंगे, तो कभी आगे नहीं बढ़ सकते। लहरों से डरकर नौका कभी पार नहीं होती, ठीक उसी प्रकार बिना संघर्ष के सफलता नहीं मिलती। कवि लिखते हैं कि एक नन्हीं सी चींटी जब मुँह में दाना लेकर दीवार पर चढ़ती है, तो वह सौ बार फिसलती है। बार–बार गिरने पर भी उसका आंतरिक विश्वास और साहस कम नहीं होता, और अंततः उसकी मेहनत बेकार नहीं जाती तथा वह सफल होती है। गोताखोर का उदाहरण देकर कवि कहते हैं कि समुद्र के गहरे पानी में मोती आसानी से नहीं मिलते। गोताखोर बार–बार डुबकी लगाता है और कई बार खाली हाथ लौटता है, लेकिन इससे उसका उत्साह कम होने के बजाय दोगुना हो जाता है और अंततः उसे मोती मिल ही जाते हैं। कवि असफलता को डरने की चीज नहीं बल्कि एक चुनौती मानते हैं जिसे स्वीकार करना चाहिए। असफलता यह बताती है कि हमारी तैयारी में क्या कमी रह गई थी, जिसे सुधारकर हमें पुनः प्रयास करना चाहिए। जब तक लक्ष्य प्राप्त

न हो, तब तक विश्राम का त्याग करना चाहिए और संघर्ष का मैदान छोड़कर कभी नहीं भागना चाहिए। बिना कुछ किए किसी की जय–जयकार नहीं होती, और जो लोग लगातार कोशिश करते हैं, उनकी कभी हार नहीं होती। इनके द्वारा रचित मातृभूमि कविता भारत की प्राकृतिक सुंदरता, महान संस्कृति और ऐतिहासिक–धार्मिक गौरव का एक सुंदर चित्रण है। कवि ने इस कविता में देश की भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए लिखा हैं कि उत्तर में खड़ा हिमालय आकाश को चूमता है और दक्षिण में सागर लगातार इसके चरण धोकर झूमता है। यहाँ गंगा, यमुना और त्रिवेणी जैसी पवित्र नदियाँ बहती हैं जिनकी निराली छटा हर तरफ फैली हुई है। देश की पहाड़ियों और झाड़ियों में चिड़ियाँ चहकती हैं, घनी अमराइयाँ हैं, कोयलें कूकती हैं और मलय पर्वत से आने वाली ठंडी व सुगंधित हवा तन–मन को सँवार देती है। भारत वह पवित्र पुण्यभूमि है जहाँ भगवान राम और सीता ने जन्म लिया। यहीं श्रीकृष्ण ने वंशी बजाई और पवित्र गीता का उपदेश दिया। इसके अलावा गौतम बुद्ध ने जन्म लेकर इस जग को दया और करुणा का मार्ग दिखाया। इस प्रकार कवि अपनी इस जन्मभूमि, धर्मभूमि, कर्मभूमि और मातृभूमि के प्रति अपना अगाध प्रेम, कृतज्ञता और पूर्ण समर्पण भाव व्यक्त करते हैं। इनकी अन्य कविता जय राष्ट्रीय निशान देश के राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गौरव के प्रति अगाध प्रेम, समर्पण और देशभक्ति की भावना से ओत–प्रोत एक ओजस्वी रचना है. इसमें कवि सोहन लाल द्विवेदी जी अपने देश के राष्ट्रीय ध्वज की जय–जयकार करते हैं और कामना करते हैं कि यह मलय पवन में लहर–लहर कर और नील गगन में फहर–फहर कर संसार के आंगन में सबसे ऊंचे और महान रूप में हमेशा सुशोभित रहे। कवि आह्वान करते हैं कि देश के बूढ़े और जवान सभी शूरवीर अपने मस्तक पर रोली अर्थात विजय का तिलक सजाकर आगे आएं और देश की रक्षा के लिए मौत की होली खेलने अर्थात बलिदान होने को तैयार रहें। वे कहते हैं कि इस राष्ट्रीय ध्वज के साए में दीन–दुखियों के प्रति मन में ममता, देश के वास्ते मरने का साहस और सभी मनुष्यों में आपसी समता व भाईचारा होना चाहिए। स्वतंत्रता के इस महासमर में देशवासियों का सीना फौलाद की तरह मजबूत हो और उनके हृदय में देशभक्ति की शक्ति समाई रहे। कवि प्राणों की बाजी लगाकर भी इस महान राष्ट्रीय निशान की रक्षा करने का संदेश देते हैं। इनकी अन्य कविता श्बढ़े चलो बढ़े चलोश एक अत्यंत प्रेरणादायक और ओजस्वी कविता है, जिसमें कवि ने स्वतंत्रता सेनानियों और देशवासियों को हर परिस्थिति का सामना करते हुए निरंतर आगे बढ़ने का संदेश दिया है। कवि के अनुसार, यदि तुम्हारे पास लड़ने के लिए न कोई शस्त्र हो, न अस्त्र, और न ही पर्याप्त अन्न या वस्त्र हो, तब भी तुम्हें पीछे नहीं हटना है और न ही डरना है, बस अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते जाना है। रास्ते में चाहे हिमालय जैसी ऊंची और कठिन बाधाएं सामने हों, तुम्हारा संकल्प और दृढ़ प्रतिज्ञा और अधिक निखरनी चाहिए। चाहे जान भी बिखर जाए, तुम्हें रुकना या झुकना नहीं है। जीवन में चाहे कितनी भी घोर आपदाएं या अटूट घटाएं घिर आएं, विपैली परिस्थितियां हों, उन्हें अमृत मानकर स्वीकार करो। जीते चलो, मरते चलो, लेकिन आगे बढ़ते चलो। अंत में कवि कहते हैं कि अपने प्राणों के रक्त से स्वतंत्रता का मूल्य चुकाओ और युगों की बेड़ियों को खोल फेंको। इस मार्ग पर न तो डरना है और न ही पीछे हटना है।

अन्य महत्वपूर्ण राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित कविता बापू की इन प्रसिद्ध पंक्तियों संसार पूजता जिन्हें तिलक, रोली, फूलों के हारों से, मैं उन्हें पूजता आया हूँ बापू! अब तक अंगारों सेष्कृका सारांश यह है कि कवि महात्मा गांधी जैसे महान और सच्चे कर्मयोगियों की पूजा पारंपरिक या दिखावटी तरीकों से नहीं, बल्कि उनके संघर्ष, त्याग और क्रांतिकारी विचारों से करता है। संसार साधारणतया उन लोगों की पूजा तिलक, रोली और फूलों के हार पहनाकर करता है जो सत्ता या प्रसिद्धि में होते हैं। इसके विपरीत, कवि बापू और उनके जैसे प्रखर व्यक्तित्वों को उनके द्वारा उठाए गए कष्टों और संघर्ष रूपी श्अंगारोंश के माध्यम से पूजता है। बापू जैसे महापुरुष समाज में सोई हुई चेतना

को जगाने और जीवन की ठप पड़ी ऊर्जा में नई जान फूंकने का काम करते हैं। वे विद्युत और अग्नि की तरह कठिन परिस्थितियों और संकटों को खुद सहन करते हैं। ऐसे वीर और त्यागी पुरुषों का मुकुट उनके संघर्षों से चमकता है और उनके बलिदान व रक्त की धाराओं से ही समाज में ज्ञान और स्वतंत्रता की रोशनी फैलती है। यह कविता महात्मा गांधी के कोमल स्वभाव के पीछे छिपी उस प्रखर और अडिग क्रांतिकारी शक्ति को नमन करती है, जिसने देश को नया मार्ग दिखाया। इनके द्वारा रचित कविता किसको नमन करूँ मैं भारत देश की महानता, उसकी संस्कृति और मानवीय मूल्यों को समर्पित है। कविता के आरंभ में कवि रामधारी सिंह दिनकर असमंजस में हैं कि वे भारत को किस रूप में नमन करें। क्या वे देश के भौतिक स्वरूप यानी यहाँ के पर्वतों, नदियों और वनों को नमस्कार करें या देशवासियों के मन को? कवि आगे स्पष्ट करते हैं कि भारत केवल पृथ्वी के मानचित्र पर बनी किसी त्रिभुज जैसी भौगोलिक आकृति या पत्थरों और पानी का टुकड़ा भर नहीं है। यह एक चेतना और मानवीय शील का प्रतीक है। जहाँ भी प्रेम और एकता अखंडित रूप से मौजूद है, वहीं जीवंत भारत का वास है। भारत वह देश हैं जो विभिन्न द्वीपों और संस्कृतियों के बीच दूरियों को पाटकर प्रेम और भाईचारे के पुल का निर्माण करता है। दुनिया में जहाँ भी शांति की गूँज उठती है, धर्म का दीप जलता है, या कोई वीर सत्य और न्याय के लिए अपने प्राणों की आहुति देता है, वह भारत का ही स्वरूप है। इस कविता के माध्यम से कवि यह मानते हैं कि नमन केवल किसी भौतिक स्थान को नहीं, बल्कि उन महान मानवीय भावनाओं, प्रेम, भाईचारे, शांति और बलिदान को होना चाहिए जो पूरी मानवता को आपस में जोड़ते हैं। इनकी अन्य कविता जाग रहे हम वीर जवान देश के वीर सैनिकों और युवाओं के शौर्य, देशभक्ति तथा समर्पण की भावना पर आधारित है। देश के वीर जवान सुबह की नई किरण और नए दिन के उजाले की तरह हैं, जो देश में नई उम्मीद और चेतना जगा रहे हैं. नवीन भारत के ये सैनिक धीर, वीर, गंभीर और अपने निश्चय पर अटल रहते हैं. ये जवान ऊंचे हिमालय के पहरेदार हैं। ये धरती पर शांति के दूत बनकर सभी को छांव और सुरक्षा देते हैं. वीर–प्रसूता माता की आंखों का उजाला ये जवान गंगा, यमुना और हिंद महासागर जैसी महान नदियों व सीमाओं के सच्चे रखवाले हैं, जो देश के वास्ते अपना तन, मन और धन सब कुछ कुर्बान करने को तैयार रहते हैं. इनकी कविता कलम आज उनकी जय बोल देश के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाले अमर शहीदों और गुमनाम वीरों को समर्पित एक ओजस्वी और प्रेरणादायक रचना है। कवि इस कविता में अपनी कलम से आह्वान करते हुए कहते हैं कि हे कलम! आज तू केवल उन वीर शहीदों की विजय का गान कर, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता और रक्षा के लिए अपनी अस्थियों को जला–जलाकर क्रांति की चिंगारी फैलाई और बिना किसी स्वार्थ या मोलभाव के देश की पुण्य–वेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। कवि उन असंख्य गुमनाम और छोटे दीपक रूपी वीरों की बात करते हैं जो तूफानों के बीच चुपचाप जलकर बुझ गए, लेकिन उन्होंने कभी भी अपने यश, सम्मान या प्रेम की कोई मांग नहीं की। साधारण इतिहास ऐसे अनाम वीरों के बलिदान का पूरा ब्योरा भले ही न रख पाए, परंतु उनके महान कार्यों के साक्षी स्वयं सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी, और यह पूरा ब्रह्मांड है। उनके हुंकार और सिंहनाद से यह धरती हमेशा कांपती रही है। इस कविता के माध्यम से दिनकर जी का यह संदेश है कि समाज और इतिहास को उन सच्चे और निस्वार्थ देशभक्तों के बलिदान को कभी नहीं भूलना चाहिए और उनकी ही यशोगाथा को सदाद सर्वदा याद रखना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

- गुप्त, मैथिली शरण : भारत भारती.
- गुप्त, मैथिली शरण : स्वदेश–संगीत
- गुप्त, मैथिली शरण : मैथिली शरण गुप्त ग्रंथावली
- चतुर्वेदी, माखन लाल : मरण–ज्वार
- चतुर्वेदी, माखन लाल : हिम तरंगिणी
- द्विवेदी, सोहन लाल : पूजगीत
- द्विवेदी, सोहन लाल : भैरवी
- दिनकर, रामधारी सिंह : हुंकार
- दिनकर, रामधारी सिंह : नीम के पत्ते
- दिनकर, रामधारी सिंह : चक्रवाल